श्री राम जी की आरती

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भाव भय दारुणं |
नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम् ||

कंदर्प अगणित अमित छवी नव नील नीरज सुन्दरं |
पाट-पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमी जनक सुतावरम् ||

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्य वंश-निकन्दन |
रघुनंद आनंदकंद कौशलचंद दशरथ-नन्दनम् ||

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारू अंग विभुषणं |
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर-दूषणं ||

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन रंजनं|
मम हृदय कुंज निवास कुरु कामादि खल-दल गंजनम् ||

मनु जाहिं राचेऊ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर सावरों |
करुना निधान सुजान सिलू सनेहू जानत रावरो ||

एही भाँती गौरी असीस सुनी सिय सहित हिय हरषी अली |
तुलसी भवानी पूजी पूनी पूनी मुदित मन मन्दिर चली ||